सम्माननीय संपादक महोदय,

पूज्य गुरुदेवश्री की 125 वीं जन्म जयन्ती केपावन प्रसंग पर प्रासंगिक लेख संलग्न है। कृपया आप इसेअपनी पत्रिका में यथा योग्य स्थान देनेकष्ट करें।

– अभयकुमार जैन, देवलाली

वाणी अमृत घोली है

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी गत 125 वर्ष पूर्व जन्मेआध्यात्मिक क्रान्ति के अग्रदूत महापुरुष हुयेहैं। उनके द्वारा उद्घाटित जिनवाणी के महत्वपूर्ण सिद्धान्त लाखों मुमुक्षुओं कोभेद विज्ञान और आत्मानुभूति की प्रेरणा देरहेहैं और युगों-युगों तक देतेरहेंगे।

सौराष्ट्र (गुजरात) के छोटे सेगाँव उमराला में जन्मेश्री कानजी स्वामी की परिणति बचपन सेही वैराग्य रस सेभीगी रहती थी, जिससेप्रभावित होकर लोग इन्हें भगत कहनेलगेथे। मात्र 24 वर्ष की चढ़ती जवानी में स्थानकवासी साधु पद में दीक्षित होजाना उनकी प्रबल वैराग्य परिणति का ही कमाल था।

प्रबल वैराग्य और गम्भीर शास्त्राभ्यास होनेपर भी उन्हें यथार्थ मार्ग का अभाव खटकता था अत: जीवन में शून्यता और नीरसता भासित होती थी। जरा सोचिये! उस महापुरुष की अन्तर परिणति कैसी होगी, जिसेअसत्य सहन नहीं होता था और सत्य प्राप्त नहीं था। जोउपलब्ध, वह स्वीकार नहीं था और जिसकी चाह थी वह मिलता नहीं था।

आखिर सच्ची लगन के फलस्वरूप सम्वत् 1978 में (दीक्षा लेनेके 8 वर्ष बाद) उनके हाथ शुद्धात्म तत्त्व दर्शायक ग्रन्थराज समयसार आया, जिसेप्रथम नजर में देखतेही उनके श्री मुख सेसहज उद्गार निकल पड़ा ''आ तोअशरीरी थवानोशास्त्र छे ..''

अब क्या बाकी रह गया था! पथिक कोसच्ची राह मिली, भटकन समाप्त हुई और वेसमयसार की अथाह गहराईयों में गोतेलगाकर मुक्ति मार्ग के मोती खोजनेलगे।

इसके पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक आदि अनेक दिगम्बर ग्रन्थों में अवगाहन करते-करतेउनका मोहमल प्रक्षालित होनेलगा और वेबाल ब्रह्मचारी महात्मा मुक्तिवधू का वरण करनेके लियेकमर कसकर तैयार होगये। एतदर्थ उन्होंनेमिथ्यावेश त्यागकर स्वयं कोदिगम्बर श्रावक घोषित कर दिया और वेसोनगढ़ नामक छोटे से गाँव कोअपना स्थायी निवास बनाकर श्रुतसमुद्र के मंथन में रम गये।

उनकी अमृतवाणी सोनगढ़ सेप्रसूत होकर सौराष्ट्र गुजरात तथा सम्पूर्ण देश और विदेश में भी पहुँचनेलगी। सैकड़ों जिनमंदिरों का निर्माण लाखों ग्रन्थों का प्रकाशन, मुमुक्षु मण्डलों की स्थापना दैनिक स्वाध्याय सभाओं की परम्परा, लगभग 10 विद्यालयों के माध्यम सेभावी पीढ़ी में विद्वानों का निर्माण आदि अनेक गतिविधियों के रूप में आज जोशासन प्रभावना होती दिख रही है, उसके मूल में पूज्य गुरुदेवश्री की चमत्कारिक वाणी ही है।

जिस प्रकार दूध में घी, बीज में वृक्ष तथा नव तत्त्वों में एक चैतन्य ज्योति व्याप्त है, उसी प्रकार इस

शासन प्रभावना में उनकी आत्मस्पर्शी वाणी व्याप्त है।

यह तथ्य भी इस कलिकाल का आश्चर्य है कि आधुनिक तकनीकी विकास के फलस्वरूप उनकी वाणी आज सी.डी. में संकलित 9200 प्रवचनों के रूप में उपलब्ध है।

पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में ही उनकी वाणी सद्गुरु प्रवचन प्रसाद, आत्मधर्म तथा अन्यग्रन्थों में संकलित होकर जन-जन तक पहुँचनेलगी थी। माननीय नवनीत भाई सी. जवेरी की तीव्र भावना एवं अथक प्रयासों के फलस्वरूप उनकी वाणी तत्कालीन तकनीक के अनुसार टेपों में सुरक्षित की जानेलगी थी। एतदर्थ उस वाणी सेउपकृत होनेवालेआत्मार्थीजन नवनीतभाई के चिरऋणी रहेंगे।

पूज्य गुरुदेवश्री की भाषा अत्यन्त सरल, ग्रामीण गुजराती तथा मनमोहक शैली होनेपर भी विषय अत्यन्त गम्भीर, अपूर्व तथा मिथ्या मान्यताओं का खण्डन करनेवाला होनेसेउसेगलेउतारना बड़ा कठिन था अत: उनकी वाणी का मर्म समझनेके जिज्ञासुओं के साथ-साथ विरोधियों की संख्या भी बढ़ती जाती थी। जिज्ञासुओं की जिज्ञासा के समाधान और विरोधियों कोशान्त करनेमें गुरुदेव के सान्निध्य में रहनेवालेतथा बारम्बार सोनगढ़ आकर उनकी वाणी का रसपान करनेवालेसर्वश्री रामजीभाई दोशी, खीमचन्दभाई, बाबूभाई मेहता, बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' पण्डित धन्नालालजी, पण्डित चिमनभाई, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचंदजी, पण्डित कैलाशचन्दजी (बुलन्दशहर) जैसेआदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों के माध्यम सेगुरुदेवश्री की वाणी का मर्म सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचता था और आज भी पहुँच रहा है।

सभी विद्वान समयसार, मोक्षमार्ग प्रकाशक आदि ग्रन्थों के आधार सेपूज्य गुरुदेवश्री द्वारा बतायेगयेरहस्यों कोही समझातेहैं, भलेही उनकी शैली, उदाहरण, तर्क-युक्तियाँ आदि भिन्न-भिन्न हों। अत: यह विचार निरर्थक है कि कोई वक्ता अपनी बात कह रहा है या गुरुदेवश्री की अथवा जिनवाणी की। पूज्य गुरुदेवश्री भी अत्यन्त प्रमोद सेकहतेहैं- ''दिगम्बर सन्तों तोकेवली भगवान के पेट में बैठकर बात करतेहैं, ... केवली के आढ़तिया हैं..... आ तोसौ इन्द्रों नी हाजरी मा गणधर भगवन्तों नी हाजरी मा त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ परमात्माए कहेली वाणी छे ....'' अत: यह गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहियेकि जिनागम के अनुसार बोलनेवाला कोई भी वक्ता पूज्य गुरुदेव तथा आचार्य भगवन्तों के आशय की ही व्याख्या करता है। शास्त्र सभा के प्रारम्भ में भी यही कहा जाता है .... अस्य मूल ग्रन्थ कर्तार: तदुत्तरग्रन्थप्रति श्री गणधर देवा: तेषां वचनानुसारमासाद्य कुन्दकुन्दाम्नाये.....

.(यहाँ यह बात विशेष ध्यान देनेयोग्य है किसी गाथा विशेष या शब्द विशेष के अर्थ के बारेमें अनेक वक्ताओं में मत-भेद होना स्वाभाविक है। यदि मूल सिद्धान्त अर्थात् शास्त्र सुरक्षित है तोइस मत-भेद के बारेमें विचार-विमर्श करतेहुयेभी इसेअधिक गम्भीरता सेनहीं लेना चाहिये।)

इस प्रकार लगभग 75 वर्षों सेपूज्य गुरुदेवश्री की वाणी, संकलित प्रवचनों / विद्वानों के माध्यम सेजन-जन तक प्रवाहित होरही है। अद्यतन तकनीक का प्रयोग करतेहुयेश्री निमिषभाई शान्तिलाल शाह एवं श्री अनन्तराय अमुलखराय शेठ परिवार द्वारा इस वाणी कोसी.डी. तथा इन्टरनेट पर भी उपलब्ध करा दिया गया है।

उक्त माध्यमों सेपूज्य गुरुदेव की वाणी समझकर रसपान करनेवालों की संख्या बहुत कम है। युवा पीढ़ी में तोउनके जीवन तथा वाणी के चमत्कारों सेपरिचित युवकों की संख्या बहुत ही कम है। अत: उक्त दोनों परिवार की तथा गुरुदेवश्री की वाणी के रहस्यों सेपरिचित मुमुक्षुओं की तीव्र भावना होना

स्वाभाविक है कि अधिक सेअधिक लोग गुरुदेवश्री की वाणी का लाभ लें।

वर्तमान में विद्यमान विशेषज्ञ विद्वानों के माध्यम सेतथा स्वयं अपनी रुचि और बुद्धि के बल सेलाखों लोग जिनागम के अभ्यास में संलग्न हैं, परन्तु यदि वेगुरुदेवश्री की वाणी कोभी अपनेस्वाध्याय का आधार बनायें तोउन्हें अपूर्व गहनता, स्पष्टता तथा आनन्द की अनभूति होगी। यह आनन्द वैसा ही होगा जोप्रतिदिन के सामान्य भोजन के अतिरिक्त प्रिय व्यंजन के स्वाद लेनेपर आता है अथवा स्थानीय जिनालय में दर्शन-पूजन और स्थानीय विद्वानों के प्रवचनोंका लाभ लेनेके साथ-साथ महान तीर्थ वन्दना और विशिष्ट विद्वानों के समागम सेआता है।

गुरुदेवश्री की वाणी का चमत्कार ही ऐसा है जिसनेतत्कालीन मूर्धन्य विद्वानों कोभी आश्चर्यचकित कर दिया था, जोअनेक पात्र जीवों कोस्वानुभूतिरस पान करनेमें निमित्त बनी है, जिसके निमित्त सेलाखों लोगों के मोह महामद की बेहोशी मिटकर शुद्ध चैतन्यप्रकाश में जीनेकी राह मिली है और पंचम काल के अन्त तक प्राप्त होती रहेगी। उस वाणी का पूरा रसपान तोआत्मानन्द की भांति अनुभवगम्य है। गन्नेके रस का स्वाद पीकर ही जाना जा सकता है, वाणी सेक्या और कितना कहा जाये? उनकी शैली पर तोअलग लेख लिखेजानेचाहिये। यहाँ तोमात्र यही कहना चाहता हूँ कि श्रोताओं की प्रतिक्रिया की परवाह कियेबिना, स्वयं जिनागम का रस पीना एवं अत्यन्त करुणापूर्वक भव्यों कोपिलाना इनकी प्रमुख विशेषता है। सारी दुनिया कोअपनी वंशी पर डोलानेवाली दिव्यध्वनि जैसी मिठास भरी वाणी इस काल में अन्यत्र दुर्लभ है।

पूज्य गुरुदेवश्री की 125वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर निम्नलिखित पक्तियाँ उद्धृत करतेहुयेअपनेश्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ -

वाणी अमृत घोली है, सारी दुनिया डोली है।
वीतराग के गुप्त हृदय की अन्तर ग्रन्थि खोली है॥

- अभयकुमार जैन, देवलाली